भारतीय राजनीति में दबाव समूह की कार्य प्रणाली का आलोचनात्मक अध्ययन
(विशेषतः सन् 2000 से 2020 तक)

"बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ"

राजनीति विज्ञान में

पी.एच.डी की उपाधि हेतु

शोध प्रस्तावना

शोध निर्देशिका

JV'n डॉ. सपना गहलोत

राजनीति विज्ञान विभाग

शोधार्थी

JV'n राजेन्द्र कुमार

मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विभाग
ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर

2023

विषय सूची

क्र. सं.	विषय	पृ.सं.
1.	प्रस्तावना	2–11
2.	विषय एवं अध्ययन क्षेत्र	12
	भारतीय राजनीति में दबाव समूह की कार्य प्रणाली का आलोचनात्मक अध्ययन (विशेषतः सन् 2000 से 2020 तक)	
3.	उद्देश्य	13
4.	अध्ययन की रूपरेखा	14–15
	1. परिचय	
	2. सैद्धान्तिक आयाम	
	3. दबाव समूह का अर्थ, कार्य एवं प्रकृति	
	4. भारत में दबाव समूह की कार्यप्रणाली एवं उपकरण/तकनीक	
	5. निष्कर्ष	
5.	शोध परिकल्पना	16
6.	शोध प्रश्न	17
7.	शोध पद्धति	18
8.	साहित्य अवलोकन	19–22
9.	संदर्भ ग्रन्थ सूची	23–29

भारतीय राजनीति में दबाव समूह की कार्य प्रणाली का आलोचनात्मक अध्ययन (विशेषतः सन् 2000 से 2020 तक)

1. प्रस्तावना/परिचय :-

भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है लोकतांत्रिक देशों की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यहां के नागरिकों को प्राप्त होने वाले मूलभूत अधिकार है। भारत का संविधान भी नागरिकों अपने हितों की रक्षा हेतु संघ समूह, संगठन बनाने का मूलभूत अधिकार प्रदान किया है। यही समूह और संगठन ही अपने हितों की रक्षा के लिए दबाव समूहों के रूप में कार्य करते है।

दबाव समूह लोकतांत्रिक राजव्यवस्थाओं के अन्तर्गत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। यह नागरिकों व सरकार के संबंध में स्थापित करने में मध्यस्थ की भूमिका निभाते हैं।

देश की आजादी के बाद से दबाव समूह भारतीय राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहे हैं। दबाव समूह भारतीय राजनीति में एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में उभरे हैं, खासकर 1990 के दशक में भारतीय अर्थव्यवस्था के उदारीकरण के बाद से दबाव समूह, जिन्हें हित समूहों के रूप में भी जाना जाता है, ऐसे संगठन हैं जो प्रत्यक्ष और

अप्रत्यक्ष तरीकों से नीति–निर्माण को प्रभावित करना चाहते हैं। वे सार्वजनिक नीति को आकार देने और विशिष्ट समूहों के अधिकारों की वकालत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये समूह व्यवसाय, श्रम, पेशेवर संघों, जातीय और धार्मिक अल्पसंख्यकों और सामाजिक आंदोलनों सहित हितों की एक विस्तृत श्रृंखला का प्रतिनिधित्व करते हैं।

भारत में दबाव समूह स्वतंत्रता के बाद निरन्तर भारतीय राजनीति व्यवस्था में सम्मिलित रहे है। भारत में दबाव समूह का निर्माण, भाषा, धर्म, क्षेत्र, जाति, व्यवसाय आदि के आधार पर हुआ है।

दबाव समूह अपने सदस्यों की हितों की रक्षा हेतु सरकार व विधायिका पर प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष प्रभाव डालते है। हडताल, दबाव, आंदोलन, सौदेबाजी आदि युक्तियों का प्रयोग करते है।

दबाव समूह राजनैतिक दलों से भिन्न होते है। राजनैतिक दलों का मूल उद्देश्य चुनाव के भाग लेकर सता को प्राप्त करना जबकि दबाव समूह का उद्देश्य सता को प्राप्त करना नहीं होता हालांकि यह अपने सदस्यों की हितो की रक्षा के लिए सरकार पर प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष तरीके से दबाव डालते है।

ये समूह सरकारी नीतियों, निर्णयों आदि को प्रभावित करने के उद्देश्य से साझा हितों वाले व्यक्तियों या संगठनों द्वारा बनाए जाते है।

दबाव समूह लोकतांत्रिक देशों गत्यात्मकता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है और समाज की विशिष्ट वर्गो की चिंताओं, हितो को आवाज देते है यह सरकार और लोगों के बीच मध्यस्थ के रूप में कार्य करते है। उनके हितों की वकालत करते है इनके प्रभाव के कारण शासन व्यवस्था, नीति–निर्माण और सामाजिक विकास के विभिन्न पहलुओं पर गहरा प्रभाव पडता है।

भारत में ब्रिटिश शासन काल में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस एक प्रभावशाली दबाव समूह के रूप में कार्य किया। कांग्रेस ने जनता में राजनैतिक जागृति प्रदान कर लामबंद किया तथा राजनीति सुधारों की मांग की तथा स्वतंत्रता के बाद भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस एक राजनीतिक दल के रूप में परिवर्तित हो गई। राष्ट्रीय कांग्रेस के अलावा आत्मीय सभा (1815), यंग बंगाल (1831), सत्य शोधक समाज (1873), प्रार्थना समाज (1867), आर्य समाज (1875), मुस्लिम लीग (1916) आदि संगठन स्थापित हुए जिन्होनें लोगों में जाग्रति प्रदान कर शासन व जनता के बीच मध्यस्थ के रूप में कार्य किया।

रजनी कोठारी ने भारतीय राजनीति में बदाव समूहों के महत्वपूर्ण अभिनेताओं के रूप में पहचान की। उनके अनुसार दबाव समूह राज्य और समाज के बीच मध्यस्थ के रूप में कार्य करते है। तथा विभिन्न वर्गो की चिंताओं को व्यक्त करने और आगे बढनें में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। इसलिए दबाव समूह लोकतांत्रिक राजनीति व्यवस्था को अधिक समोवशी और सहभागी बनाने में योगदान करते है।

स्वतंत्रता के बाद भी दबाव समूह भारतीय राजनीतिक व्यवस्था की गतिशीलता को बनाए रखा तथा निरन्तर समयान्तराल पर अनेक दबाव समूह उभरकर सामने आए, ये समूह श्रमिक संघो, किसान संगठनों, व्यापार, संघो पर्यावरण और मानवाधिकार समूहों से लेकिर जाति, धर्म आदि के आधार पर निर्मित हुए।

भारत के प्रमुख दबाव समूहों में आखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस, भारतीय उद्योग परिसंघ, नेशनल चैम्पियन फॉर दलित ह्युमन राइट्स, भारतीय किसान यूनियन, विद्यार्थी संगठन आदि सम्मिलित है।

भारतीय राजनीति में दबाव समूह सरकार की नीतियों को प्रभावित करने के लिए विभिन्न युक्तियों का इस्तेमाल करते है। इनमें पैरवी, सार्वजनिक प्रदर्शन, हडताले, मीडिया, अभियान, आदि शामिल है। ये समूह अक्सर अपने सदस्यो को लामबंद करते है। विरोध प्रदर्शन

आयोजित करते हें अपने हितों की रक्षा हेतु सरकार के प्रतिनिधियों के साथ बातचीत करते है। तथा कई बार यह समूह नीति अनुसंधान, जन जागरूकता अभियानों को भी आयोजित करते है।

भारतीय राजनीति में दबाव समूहों की उपस्थिति के सकारात्मक एवं नाकारात्मक प्रभाव रहे है, सकारात्मक रूप में दबाव समूह समाज के कमजोर व उपेक्षित वर्गो की आवाज प्रतिनिधित्व करके और उनके हितो को आगे लाकर लोकतांत्रिक प्रक्रिया को सुदृढ करते है तथा वे नागरिको और नीति निर्माताओं के बीच खाई को पाटने में मदद करते है।

दबाव समूहों में श्रम अधिकारों, पर्यावरण संरक्षण, उपभोक्ता अधिकारों और सामाजिक न्याय से संबंधित कानूनों और नीतियों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है।

हालांकि भारत में दबाव समूहों को भी आलोचनाओं और चुनौतियों का सामना करना पडा है कुछ आलोचकों का तर्क है कि कुछ समूह अनुचित प्रभाव डालते है और अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए हिसकं साधनों का सहारा लेते है। इससे लोकतांत्रिक प्रक्रिया कमजोर होती है। इसलिए दबाव समूह की गतिविधियों के लिए एक पारदर्शी

और जबावदेह ढांचा होना आवश्यक है। जिसमें दबाव समूह और सरकार के बीच संवाद को प्रोत्साहित किया जा सके।

दबाव समूहों का अर्थ, कार्य एवं महत्व

दबाव समूह का अर्थ

लोग समाज बनाते है और हर समाज में कई समूह मौजूद होते है लोग इन समूहों के अध्ययन से एक दूसरे के साथ बातचीत करते है।

ट्रूमैन के अनुसार एक समूह व्यक्तियों का एक संग्रह है जो एक या अधिक साझा दृष्टिकोण रखने वाले लोगों से निर्मित होते है।

एलन आर. बॉल के अनुसार दबाव समूह दृढता से राजनीतिक प्रक्रिया का हिस्सा है और वे सरकारी नीति की दिशा को सुदृढ करने या बदलने का प्रयास करते है लेकिन दबाव समूह सरकार बनाने की इच्छा नही रखते है।

आमण्ड एवं पॉवेल ने तुलनात्मक राजनीति में दबाव समूहों के वर्गीकरण पर विस्तृत चर्चा की है उन्होनें दबाव समूहों को संघात्मक समूह, गैर–सहयोगी दबाव समूह, संस्थागत दबाव समूह तथा एनोमिक दबाव समूह के रूप में विभाजित किया है।

कार्य एवं महत्व

रुचि अभिव्यक्तिः दबाव समूह लोगों की मांगों और जरूरतों को निर्णयकर्ताओं के ध्यान में लाते हैं। इससे लोगों के दावे ठोस और स्पष्ट हो जाते हैं।

राजनीतिक समाजीकरण के एजेंटः दबाव समूह राजनीतिक समाजीकरण के एजेंट हैं, क्योंकि वे राजनीतिक प्रक्रिया के प्रति लोगों के झुकाव को प्रभावित करते हैं। ये समूह लोगों और सरकार के बीच दो–तरफा संचार लिंक के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

दबाव समूह विधायी प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, न केवल हितों की अभिव्यक्ति की महत्वपूर्ण संरचनाओं के रूप में, बल्कि सरकार के वांछित कानूनों या कानूनों और नीतियों में संशोधन के लिए विधायकों के साथ पैरवी करने वाली सक्रिय एजेंसियों के रूप में भी।

विभिन्न राजनीतिक दलों के चुनाव घोषणापत्र तैयार करने से लेकर विधायकों द्वारा कानून पारित करने तक, दबाव समूह नियम बनाने की प्रक्रिया से जुड़े रहते हैं।

दबाव समूह और प्रशासनः दबाव समूह प्रशासन की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से शामिल होते हैं। नौकरशाही के साथ पैरवी करके, दबाव

समूह आमतौर पर नीति कार्यान्वयन की प्रक्रिया को प्रभावित करने की स्थिति में होते हैं। न्यायिक प्रशासन में भूमिकाः दबाव समूह अपने हितों की सुरक्षा और सुरक्षा के लिए न्यायिक प्रणाली का उपयोग करने का प्रयास करते हैं। हित समूह अक्सर सरकार के खिलाफ अपनी शिकायतों के निवारण के साथ–साथ किसी विशेष निर्णय या नीति को असंवैधानिक घोषित करने के लिए अदालत में जाते हैं।

जनमत के निर्माण में दबाव समूह प्रमुख भूमिका निभाते हैं। प्रत्येक दबाव समूह ऐसे सभी कानूनों, नियमों, निर्णयों और नीतियों का मूल्यांकन करने में निरंतर लगा रहता है जिनका उसके हितों पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। यह न केवल अपने सदस्यों के सामने, बल्कि आम जनता के सामने लोकप्रिय समर्थन हासिल करने के साथ–साथ सरकार का ध्यान आकर्षित करने के लिए नफा–नुकसान हमेशा रखता है।

वे सूचना अभियान चलाकर, बैठकें आयोजित करके, याचिका दायर करके आदि अपने लक्ष्यों और अपनी गतिविधियों के लिए जनता का समर्थन और सहानुभूति हासिल करने की कोशिश करते हैं। इनमें से अधिकांश समूह इन मुद्दों पर ध्यान देने के लिए मीडिया को प्रभावित करने की कोशिश करते हैं। दबाव समूह सरकार की 'गुणवत्ता में सुधार

करने में मदद करते हैं। प्रभावित समूहों के साथ परामर्श एक मुक्त समाज में निर्णय लेने का तर्कसंगत तरीका है। यह निर्णय लेने की प्रक्रिया की गुणवत्ता को बढ़ाकर सरकार को और अधिक कुशल बनाता है – इन समूहों द्वारा प्रदान की जाने वाली जानकारी और सलाह सरकार की नीति और कानून की गुणवत्ता में सुधार करने में मदद करती है।

उदार लोकतंत्र के प्रभावी कामकाज के लिए स्वतंत्र रूप से संचालित दबाव समूह आवश्यक हैं। वे सरकार और समाज के बीच एक महत्वपूर्ण मध्यस्थ संस्था के रूप में काम करते हैं। वे राजनीतिक शक्ति के फैलाव में सहायता करते हैं। वे शक्ति की एकाग्रता को संतुलित करने के लिए महत्वपूर्ण काउंटरवेट प्रदान करते हैं।

दबाव समूह नए सरोकारों और मुद्दों को राजनीतिक एजेंडे तक पहुँचने में सक्षम बनाते हैं, जिससे सामाजिक प्रगति की सुविधा मिलती है और सामाजिक गतिरोध को रोका जा सकता है। उदाहरण के लिए, महिला और पर्यावरणवादी आंदोलन दबाव समूह व्यक्तिगत और सामूहिक शिकायतों और मांगों के लिए एक 'सुरक्षा–वाल्व' आउटलेट प्रदान करके सामाजिक सामंजस्य और राजनीतिक स्थिरता को बढ़ाते हैं।

दबाव समूह सरकार की खराब नीतियों और गलत कामों को उजागर करके विपक्षी राजनीतिक दलों के काम को पूरा करते हैं। दबाव समूह इस प्रकार निर्वाचकों के प्रति निर्णय निर्माताओं की जवाबदेही में सुधार करते हैं।

दबाव समूह लोगों को शिक्षित करने, डेटा संकलित करने और नीति निर्माताओं को विशिष्ट जानकारी प्रदान करने में मदद करते हैं, इस प्रकार वे सूचना के अनौपचारिक स्रोत के रूप में काम करते हैं। राजनीति में अनेक समूहों की सक्रिय रचनात्मक भागीदारी से सामान्य हितों का व्यक्तिगत समूह हितों के साथ सामंजस्य स्थापित करने में मदद मिलती है।

2. विषय एवं अध्ययन क्षेत्र :-

विषय – भारतीय राजनीति में दबाव समूह की कार्यप्रणाली का आलोचनात्मक अध्ययन (विशेषतः सन् 2000 से 2020 तक)

अध्ययन क्षेत्र

भारतीय राजनैतिक व्यवस्था में दबाव समूह के विभिन्न प्रकारो, जिसमें व्यापार संघ, श्रमिक संघ, पेशेवर संघ, धार्मिक और जातीय समूह शामिल है, की जानकारी प्राप्त करना हैं।

दबाव समूहों द्वारा नीति निर्माण को प्रभावित करने के लिए उपयोग में लिये जाने वाले प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष साधनों की पहचान करना।

दबाव समूहों द्वारा कार्यप्रणाली में उपयोग में लिए जाने वाले तकनीक एवं उपकरणों का आलोचनात्मक मूल्यांकन कर उनकी कमजोरियों को उजागर करना।

भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था एवं शासन प्रणाली पर दबाव समूहों की सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव के अध्ययन किया जा सकता है।

3. उद्देश्य :-

इस शोध का उद्देश्य भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में दबाव समूहों की कार्यप्रणाली, तकनीक व उपकरण तथा सरकार व दबाव समूहों के बीच के संबंधो का आलोचनात्मक अध्ययन करना। इस शोध के निम्नलिखित उद्देश्य है–

1. भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में दबाव समूह नीति–निर्माण को कैसे प्रभावित करते है ?

2. भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में किस प्रकार के दबाव समूह सक्रिय है ?

3. दबाव समूहों द्वारा कार्यप्रणाली के उपयोग में ली जाने वाली तकनीक व उपकरणों का अध्ययन करना ?

4. भारत में दबाव समूह के कामकाज पर वैश्वीकरण व उदारीकरण के प्रभाव का पता लगाना ?

5. भारत में दबाव समूह के ऐतिहासिक विकास का पता लगाना।

4. अध्ययन की रूपरेखा :-

प्रस्तावित शोध के व्यवस्थित अध्ययन हेतु इसको 5 भागों में विभाजित किया जाएगा।

1. परिचय
2. सैद्धान्तिक आयाम
3. दबाव समूह का अर्थ, प्रकार, कार्य एवं प्रकृति
4. भारत में दबाव समूह की कार्य प्रणाली व उपकरण/तकनीक
5. निष्कर्ष/उपसंहार

1. **परिचय** – प्रस्तावित शोध प्रारूप का प्रथम अध्याय परिचयात्मक है जो विषय का परिचय भारतीय राजनीति में दबाव समूह की कार्यप्रणाली का आलोचनात्मक अध्ययन विशेषतः (सन् 2000 से 2020 तक) है। इसमें अध्ययन के उद्देश्य, परिकल्पना, महत्व, शोध प्रविधि, अध्याय योजना एवं साहित्य की समीक्षा का वर्णन किया जाएगा।
2. **सैद्धान्तिक आयाम** – द्वितीय अध्याय में शोध विषय भारतीय राजनीति में दबाव की कार्यप्रणाली का आलोचनात्मक अध्ययन (सन्

2000 से 2020 तक) के दबाव समूह के सैद्धान्तिक आयाम जिसमें लोकतांत्रिक राजव्यवस्थाओं में दबाव समूह का राजनैतिक व्यवस्था के साथ संबंधो के सैद्धान्तिक पक्ष का वर्णन किया जाएगा।

3. **अध्याय तृतीय** – शोध प्रारूप के तृतीय अध्याय में दबाव समूह का अर्थ, कार्य, प्रकृति तथा उनके प्रंकारों का अध्ययन किया जाएगा।
4. **चतुर्थ अध्याय** – शोध प्रारूप के चतुर्थ अध्याय में भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था में दबाव समूहों की कार्यप्रणाली तथा उनके द्वारा उपयोग में लिए जाने वाले उपकरणों व तकनीकी का अध्ययन किया जा सकेगा तथा दबाव समूहों तथा राजनीतिक व्यवस्था के बीच संबंधों का आलोचनात्मक मूल्यांकन किया जा सकता है।
5. **निष्कर्ष** – प्रस्तुत अध्याय में अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष प्रस्तुत करते हुए दबाव समूह की कार्यप्रणाली का आलोचनात्मक मूल्यांकन किया जायेगा।

5. शोध परिकल्पना :-

1. भारतीय राजनैतिक व्यवस्था में दबाव समूहों का व्यवस्थित संगठन और कार्यप्रणाली अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने एक प्रभावशाली भूमिका निभा सकती है।
2. दबाव समूह भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था को किस हद तक प्रभावित करते है।
3. दबाव समूह जो जाति धर्म, व्यवसाय आदि के आधार पर स्थापित होकर सामूहिक प्रयत्नों द्वारा सरकार को प्रभावित करते है।
4. दबाव समूह ससद, सरकार, स्थानीय प्राधिकरणों को अपने दबाव में लाकर अपने लक्ष्यों को प्राप्त करते है।

6. शोध प्रश्न :-

1. भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में कौन–कौन से दबाव समूह सक्रिय है?
2. दबाव समूहों द्वारा कार्यप्रणाली में उपयोग लिए जाने वाले उपकरणों व पद्धतियों का अध्ययन ?
3. दबाव समूह अपने हितों की प्राप्ति हेतु किस प्रकार भारतीय राजनीतिक व्यवस्था को प्रभावित करते है ?
4. भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में दबाव समूहों की कार्यप्रणाली का आलोचनात्मक मूल्यांकन करना ?
5. भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में दबाव समूह किस सीमा तक अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में सफल रहे है ?

7. शोध प्रविधि :-

प्रस्तावित शोध प्रविधि के अन्तर्गत ऐतिहासिक, विश्लेषणात्मक व वर्णनात्मक पद्धति का प्रयोग किया जायेगा। तथा इसके लिए आंकडों की प्राप्ति हेतु प्राथमिक डेटा तथा द्वितीयक आंकडों का उपयोग किया जाएगा तथा डेटा प्राप्ति हेतु पुस्तकों, रिसर्च पेपर, रिपोर्ट, लेख, पत्र–पत्रिकाएं, पाण्डुलिपि, पूर्व में हुए शोध अध्ययन आदि का उपयोग किया जाएगा।

प्राथमिक डेटा की प्राप्ति के लिए चयनित दबाव समूहों के नेताओं व सदस्यों का साक्षात्कार, अनुसूची, प्रश्नावली आदि विधियों का उपयोग कर प्राथमिक डेटा प्राप्त किया जाएगा।

8. साहित्य अवलोकन :-

दबाव समूह दशकों से राजनीति विज्ञान में अध्ययन का विषय रहे हैं। विद्वानों ने विभिन्न राजनीतिक व्यवस्थाओं में दबाव समूहों की भूमिका और प्रभाव का विश्लेषण किया है। भारतीय संदर्भ में, कई अध्ययनों ने दबाव समूहों के कामकाज की जांच की है। उदाहरण के लिए छिब्बर और कोलमैन (2004) ने भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में हित समूहों की भूमिका और नीति–निर्माण पर उनके प्रभाव का विश्लेषण किया। इसी तरह, नायक (2016) ने भारत की आर्थिक नीतियों को आकार देने में दबाव समूहों की भूमिका की जांच की।

इंटरेस्ट ग्रुप्स एंड डेवलपमेंटः बिजनेस एंड पॉलिटिक्स इन ए प्लुरल सोसाइटी'' रजनी कोठारी द्वारा यह पुस्तक भारत में हित समूहों, राजनीति और विकास के बीच संबंधों की पड़ताल करती है। यह नीति–निर्माण को प्रभावित करने में दबाव समूहों की भूमिका और उनके सामने आने वाली चुनौतियो पर चर्चा करता है।

भारत में दबाव समूहः क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य'' डी. बनर्जी और आर.पी. सिंह द्वारा संपादित – यह पुस्तक क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों सहित भारत में विभिन्न दबाव समूहों

का एक सिंहावलोकन प्रदान करती है। यह उनकी संरचना, रणनीतियों, और नीति निर्माण प्रभाव।

दबाव की शक्तिः भारत में राजनीति और सामाजिक–आर्थिक विकास पर निबंध'' वी. एम. सिरसीकर और योगेंद्र यादव द्वारा संपादित – निबंधों का यह संग्रह भारत में राजनीतिक और सामाजिक–आर्थिक विकास को आकार देने में दबाव समूहों की भूमिका की पड़ताल करता है। इसमें एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है। जाति आधारित समूहों, कृषि आंदोलनों और पर्यावरण सक्रियता सहित विषयों का।

आर. के. भट्ट द्वारा ''भारत में दबाव समूहः रुचियों और प्रभाव का एक अध्ययन''–यह पुस्तक भारत में विभिन्न दबाव समूहों का व्यापक विश्लेषण प्रदान करती है। यह उनके गठन, संगठन और रणनीतियों के साथ–साथ नीति निर्माण और कार्यान्वयन पर उनके प्रभाव पर चर्चा करता है।

लॉयड आई रूडोल्फ और सुजैन होबर रूडोल्फ द्वारा रुचि समूह और भारत का आर्थिक विकास – यह पुस्तक आर्थिक उदारीकरण के 1990 के बाद की अवधि के दौरान भारत में आर्थिक विकास नीतियों को आकार देने में हित समूहों की भूमिका का विश्लेषण करती है। यह

विभिन्न के प्रभाव की जांच करती है व्यापार संघों और श्रमिक संघों जैसे समूह, नीति निर्माण और कार्यान्वयन पर ग्लोबल साउथ में दबाव समूह।

मैथ्यू जोसेफ सी और नंदिनी गुप्तू द्वारा संपादित 'द इंडियन एक्सपीरियंस'' – यह पुस्तक वैश्विक परिप्रेक्ष्य से भारत में दबाव समूहों का व्यापक विश्लेषण प्रदान करती है। इसमें गैर सरकारी संगठनों की भूमिका, सामाजिक आंदोलनों सहित विभिन्न विषयों को शामिल किया गया है और देश में नीति और विकास प्रक्रियाओं को प्रभावित करने वाले हित समूह।

रमेश कुमार अरोड़ा द्वारा भारतीय दबाव समूहः संरचना, गतिविधियां और प्रभाव'' – यह पुस्तक 1990 से 2020 तक भारत में दबाव समूहों की संरचना, गतिविधियों और प्रभाव की जांच करती है। इसमें नए हित समूहों के उद्भव, वैश्वीकरण के प्रभाव पर चर्चा की गई है। दबाव समूह की राजनीति, और बदलते सामाजिक–राजनीतिक परिवेश में इन समूहों के सामने आने वाली चुनौतियाँ।

भारत में दबाव समूहः ज्योति बसु द्वारा संभ्रांत राजनीति और विकास का एक अध्ययन – यह पुस्तक अभिजात वर्ग की राजनीति और

विकास पर ध्यान देने के साथ भारत में दबाव समूहों का विश्लेषण प्रस्तुत करती है। यह व्यावसायिक समूहों, जाति संघों और अन्य प्रभावशाली लोगों की भूमिका की जांच करती है। संस्थाएं नीतियों को आकार देने और देश में विकास के पथ को प्रभावित करने में।

हालांकि, भारतीय राजनीति में दबाव समूहों पर साहित्य सीमित है, खासकर 1990–2020 से उनके कामकाज के संबंध में यह अवधि महत्वपूर्ण है क्योंकि इसने अर्थव्यवस्था के उदारीकरण, क्षेत्रीय दलों के उदय और नागरिक समाज आन्दोलन के उद्भव सहित कई राजनीतिक और आर्थिक परिवर्तनों को देखा। इसलिए इस शोध का उद्देश्य इस अवधि के दौरान दबाव समूहों के कामकाज का विश्लेषण करके साहित्य में योगदान देना है। यह शोध भारत में दबाव समूह की राजनीति को समझने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले विभिन्न सैद्धान्तिक ढांचों की भी जांच करेगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Aiyer, S.P. ed., The Politics of Mass Violence in India (Bombay, 1967).
2. ------, and Raju, S.V. eds., When the Wind Blows : India's Ballot Box Revolution, (Bombay, 1978).
3. Almond, G.A. and Coleman, J.S. eds., The Politics of Developing Areas, (New Jersey, 1970).
4. -----, and Powell, G.B. Comparative Politics : A Developmental Approach, (New Delhi, 1972).
5. Altbach, Philip ed; Turmoil and Transition : Higher Education andStudent Politics in India (New York, 1968).
6. Atal, Yogesh, The Changing Frontiers of Caste, (Delhi, 1968).
7. Austin, Granville, The Indian Constitution : Corner Stone of a Nation, (Bombay, 1966).
8. Bailey, Stephen, K., ed., American Politics and Government, (New Delhi, 1967).
9. Barik, Radhakanta, Politics of the JP Movement, (New Delhi, 1977).
10. Baxter, Craig, The Jana Sangh: A Bibliography of an Indian PoliticalParty, (Philadelphia, 1969).
11. Bentley, Arthur, F., The Process of Government, (San Antonio, 1949).
12. Beteille, Andre, Studies in Agrarian Social Structure, (New Delhi, 1974)

13. Bhambri, C.P., Administrators in a Changing Society, (Delhi, 1973).
14. Bureaucracy and Politics in India, (New Delhi, 1971).
15. Bhaskaran, R., Sociology Politics, (Bombay, 1967).
16. Bhatt, Anil Caste, Class and Politics, (New Delhi, 1975).
17. Birch, A.H. The British System of Government, (London, 1967).
18. Blondel, Jean, An Introduction to Comparative Government, (London, 1969).
19. , ed., Comparative Government, (London, 1970).
20. Blondel, Jeav, Voters, Parties and Leaders, (London, 1966).
21. Bombwall, K.R. and Choudhery, L.P., Aspects of Democratic Government and Politics in India, (Delhi, 1968).
22. Brass, Paul, Factional Politics in an Indian State, (Berkley, 1965).
23. Language, Religion and Politics in North India, (New York, 1974).
24. Her, Michael, India, and World Politics, (New York, 1966).
25. , Nehru: A Political Biography, (New York, 1959).
26. -----, Political Leadership in India : An Analysis of Elite Attitudes, (NewYork, 1969).
27. ., Succession in India (London, 1966).
28. Castles, Francis G.C., G. Pressure Groups and Political Culture, (London, 1967).
29. Childs, Public Opinion, Princeton, (N.J. 1966).

30. Crouch, Harold, Trade Unions and Politics in India, (Bombay, 1966).
31. Dahl, Robert, A., Who Governs ? Democracy and Power in an AmericanCity, (London, 1961).
32. Dalvi, J.P., Himalayan Blunder, (Bombay, 1969)
33. Das Gupta, Jyotirinda, Language Conflict and National Development : Group Politics and National Language Policy in India, (Berkeley, 1970).
34. Dutt, Brahm, Five Headed Monster, (New Delhi, 1978).
35. Dwaine, Marvick, ed., Political Decision – Makers, (New Delhi, 1961).
36. Dwivedy, S.N. and Bhargava, G.S., Political Corruption in India, (New Delhi, 1967).
37. Easton, David, The Political System, (Calcutta, 1971).
38. Eckstein, Harry, Pressure Group Politics, (London, 1960).
39. Elloyd, Somerland, The Press in Developing Countries, (Delhi, 1966).
40. Finer, Herman, Governments of Greater European Powers, (London, 1956).
41. Finer, S.E., Anonymous Empire, (London, 1958).
42. Franda, Marus F., West Bengal and the Federalizing Process in India, Princeton, N.J. 1968).
43. Friedrich, Charl, J., Constitutional Government and Democracy, (Bombay, 1974).

44. Gadgil, D.R., Planning and Economic Policy in India, (Poona, 1972).

45. Geerts, Clifford, ed., Old Societies and New States : The Quest for Modernity in Asia and Africa, (London, 1963).

46. Ghurye, G.S., Caste and Class in India, (Bombay, 1950).

47. Giri, V.V., Labour Problems in Indian Industry, (Bombay, 1958).

48. Gupta, A.C., Studies in the Bengal Renaissance, (Calcutta, 1958).

49. Gupta, L.R., Indian Chambers of Commerce and Commercial Associations, (Calcutta, 1946).

50. Gupta, M.G. Aspects of Indian Constitution, (Allahabad, 1964).

51. Guy Peters, B., The Politics of Bureaucracy : A Comparative Perspective (New York, 1978).

52. Hanson, A.H. and Douglas, J., India's Democracy, (New Delhi, 1972).

53. Hanson, A.H., The Process of Planning : A Study of India's Five YearPlans, 1950-64, (London, 1966).

54. Hardgrave, Robert, L. Jr., India: Government and Politics in a Developing Nation, (New York, 1970).

55. The Dravidian Movement, (Bombay, 1965).

56. ., The Nadars of Temillands ; The Political Culture of a Community in Change, (Berkeley, 1969).

57. Harrision, Selig, S., India : The Most Dangerous Decades, (Mardas, 1965).

58. Hartmann, Horst, Political Parties in India, (Meerut, 1971).

59. Hathorn, Penniman and Ferber, Government and Politics in the United States, (New York, 1965).

60. Harzari, R.K., The Structure of the Corporate Private Sector, (Bombay, 1966).

61. Hiro Dilip, Inside India Today, (London, 1976).

62. Hutton, J.H., Caste in India : It's Nature, Function and Origin (London, 1963).

63. Jain, S.N., Kashayap and Srinviasan, eds., The Union and States,(Delhi, 1972).

64. Jennings, Ivor, Parliament, (London, 1969).

65. Jha, Satish Shekhar, Political Elite in Bihar, (Bombay, 1972).

66. Jones, W.H. Morris, India : Government and Politics, (London, 1967). 51., Parliament in India, (London, 1957).

67. Jung, Anees, Potraits of Powers –A Journey into Indian Politic (New Delhi, 1980).

68. Kahin, George Mct., Ed., Major Government of Asia, (New York, 1965).

69. Karnik, V.B., Indian Trade Unions : A Survey, (Bombay, 1966).

70. Kashyap, Subhas, Union-State Relations in India, (New Delhi, 1969).

71. Kennedy, Van Dusen, Unions, Employers and Governments, (Bombay, 1966).

72. Key, V.O., Jr., Politics, Parties and Pressure Groups, (New Delhi, 1964).

73. Khare, R.S. The Changing Brahmins, (Berkeley, 1970).

74. Kochanek, Stanely A., Business and Politics in India, (Berkeley, 1974).

75. The Congress Party of India, Princeton, (N.J., 1968).

76. Kothri, Rajni, ed., Caste in Indian Politics, (New Delhi, 1970).

77. .,ed., Party Systems and Election Studies, (Bombay, 1967).

78. Politics in India, (New Delhi, 1970). Orient Longman Ltd., ad

79. La Palombara J., and Weiner, Myron, eds., Political Parties and Political Development, (New Jersey, 1966).

80. Interest Groups in Indian Politics, (Princeton, 1963). 66. Lasswell, Harold, Politics (New York, 1936).

81. Levy and Roche, The American Political Process, (New York, 1968).

82. Luttbey, Norman, R., Public Opinion and Public Policy, (New York,1968).

83. Macridis, Roy C., and Ward, Modern Political System, (New York, 1978). [Mahendru, K.C., The Politics of Privy Purses, (Ludhiana, 1971).]

84. Mahood, H.R., Pressure Groups in American Politics, (New York, 1967).

85. Mankekar, Dr., Accession to Extinction : The Story of Indian Princes, (Delhi, 1974).

86. ..., The Press under Pressure, (New Delhi, 1973).

87. Mason, Phillip, ed., India and Ceylon : Unity and Diversity, (New York, 1967).

88. Menon, V.P., The Transfer of Power, Princeton, (N.J., 1957).

89. Mirchanani, G.G., The People's Verdict, (New Delhi, 1980).

90. Mishra, D.N., R.S.S. – Myth and Reality, (New Delhi, 1980).

91. Moodie, Graeme C and Kennedy, Gerald Studdert, Opinions, Public and Pressure Groups, (London, 1970).

92. Moreaes, Frank, India Today, (New York, 1960).

93. Murti, V.K., Political of Survival, (New Delhi, 1979).

94. Nam Joshi, M.V. and Sabade, B.R., Chambers of Commerce in India, (Bombay, 1967).